महाकवि सूरदास का साहित्य में स्थान

प्रो0 रश्मि कुमार
हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ

संक्षिप्त सारः सूरदास जी का जन्म 'रुनकता या सीही' नामक ग्राम में सन् 1478 ई. में पंडित रामदास के घर हुआ था । इनके पिता, पं. रामदास एक निर्धन सारस्वत ब्राह्मण थे और माता जी का नाम जमुनादास। सूरदास बचपन से ही कृष्णभक्ति मे रुचि रखते थे , इसी कारण उन्हे मदन मोहन के नाम से भी लोग जानते थे ।सूरदास जी जन्म से ही अंधे थे या नहीं इसके बारे मे अनेक लेख हैं कुछ लोगों का कहना है कि बाल मनोवृत्तियों एवं मानव–स्वभाव का जैसा सूक्ष्म और सुन्दर वर्णन सूरदास जी ने किया है, ऐसा कोई जन्मान्ध व्यक्ति कर ही नहीं सकता, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वे सम्भमवतः बाद में अन्धे हुए होंगे।सूरदास जी, श्री वल्लतभाचार्य के शिष्य थे। वे मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथ जी के मन्दिर में रहते थे। सूरदास जी का विवाह भी हुआ था। सूरदास के मत अनुसार श्री कृष्ण भक्ति करने और उनके अनुग्रह प्राप्त होने से मनुष्य जीव आत्मा को सद्गति प्राप्त हो सकती है। सूरदास ने वात्सल्य रस, शांत रस, और श्रिंगार रस को अपनाया था। सूरदास ने केवल अपनी कल्पना के सहारे श्री कृष्ण के बाल्य रूप का अदभूत, सुंदर, दिव्य वर्णन किया था। जिसमे बाल–कृष्ण की चपलता, स्पर्धा, अभिलाषा, और आकांक्षा का वर्णन कर के विश्वव्यापी बाल–कृष्ण स्वरूप का वर्णन प्रदर्शित किया था।सूरदास ने अत्यंत दुर्लभ ऐसा "भक्ति और श्रृंगार" को मिश्रित कर के, संयोग वियोग जैसा दिव्य वर्णन किया था जिसे किसी और के द्वारा पुनः रचना अत्यंत कठिन होगा।

शब्द संकेत : सूरदास, कृष्णभक्ति, वल्लतभाचार्य, अभिलाषा, वात्सल्य, मनोवृत्तियों ।

विषय प्रवेशः

सूरदास जी का जन्म 'रुनकता या सीही' नामक ग्राम में सन् 1478 ई. में पंडित रामदास के घर हुआ था । इनके पिता, पं. रामदास एक निर्धन सारस्वत ब्राह्मण थे और माता जी का नाम जमुनादास। सूरदास बचपन से ही कृष्णभक्ति मे रुचि रखते थे , इसी कारण उन्हे मदन मोहन के नाम से भी लोग जानते थे ।सूरदास जी जन्म से ही अंधे थे या नहीं इसके बारे मे अनेक लेख हैं कुछ लोगों का कहना है कि बाल मनोवृत्तियों एवं मानव–स्वभाव का जैसा सूक्ष्म और सुन्दर वर्णन सूरदास जी ने किया है, ऐसा कोई जन्मान्ध व्यक्ति कर ही नहीं सकता, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वे सम्भमवतः बाद में अन्धे हुए होंगे।सूरदास जी, श्री वल्लतभाचार्य के शिष्य थे। वे मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथ जी के मन्दिर में रहते थे। सूरदास जी का विवाह भी हुआ था। विरक्ती होने से पहले वे अपने परिवार के साथ ही रहा करते थे। पहले वे दीनता कें पद गाया करते थे, किन्तु वल्लसभाचार्य के सम्पर्क में अने के बाद वे कृष्णलीला का गान करने लगे।कहा जाता है कि एक बार मथुरा में सूरदास जी से तुलसी की भेंट हुई थी और धीरे–धीरे दोनों में प्रेम–भाव बढ़ गया था। सूर से प्रभावित होकर ही तुलसीदास ने श्रीकृष्ण गीतावली' की रचना की थी।सूरदास जी की मृत्यु सन् 1583 ई. में गोवर्धन के पास 'पारसौली' नामक ग्राम में हुई थी।

सूरदास जी का कार्यः

सूरदास जी को हिंदी साहित्य का सूर्य कहा जाता है। वे अपनी कृति "सूरसागर" के लिये बेहद प्रसिद्ध है। कहा जाता है की उनकी इस कृ ति में लगभग 100000 गीत है, जिनमे से आज केवल 8000 ही बचे है। उनके इन गीतों में कृष्ण के बचपन और उनकी लीला का वर्णन किया गया है। सूरदास कृष्ण भक्ति के साथ ही अपनी प्रसिद्ध कृति सूरसागर के लिये भी जाने जाते है। इतना ही नहीं सूरसागर के साथ उन्होंने सुर–सारावली और सहित्य–लहरी की भी रचना की है।सूरदास की मधुर कविताये और भक्तिमय गीत लोगो को भगवान् की तरफ आकर्षित करते थे। धीरे–धीरे उनकी ख्याति बढती गयी, और मुगल शासक अकबर (1542–1605) भी उन्हें दर्शक बन गये। सूरदास ने अपने जीवन के अंतिम वर्षो को ब्रज में बिताया। और भजन गाने के बदले उन्हें जो कुछ भी मिलता उन्ही से उनका गुजारा होता था। कहा जाता है कि सूरदास ने सवा लाख पदों की रचना की। इनके सभी पद रागनियों पर आधारित हैं। सूरदास जी द्वारा रचित कुल पांच ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं, जो निम्नलिखित हैंः सूर सागर, सूर सारावली, साहित्य लहरी, नल दमयन्ती और ब्याहलो। इनमें से नल दमयन्ती और ब्याहलो की कोई भी प्राचीन प्रति नहीं मिली है। कुछ विद्वान तो केवल सूर सागर को ही प्रामाणिक रचना मानने के पक्ष में हैं।

सूरदास जी एक सुंदर नवयुवक था तथा हर रोज सरोवर के किनारे जा बैठता तथा गीत लिखता रहता था। एक दिन ऐसा कौतुक हुआ, जिस ने उसके मन को मोह लिया। वह कौतुक यह था कि सरोवर के किनारे, एक सुन्दर नवयुवती, गुलाब की पत्तियों जैसा उसका तन था। पतली धोती बांध कर वह सरोवर पर कपड़े धो रही थी। उस समय मदन मोहन का ध्यान उसकी तरफ चला गया, जैसे कि आंखों का कर्म होता है, सुन्दर वस्तुओं को देखनाद्य सुन्दरता हरेक को आकर्षित करती है।सूरदास गीत गाने लगा। वह इतना विख्यात हो गया कि दिल्ली के बादशाह के पास भी उसकी शोभा जा पहुंची। अपने अहलकारों द्वारा बादशाह ने सूरदास को अपने दरबार में बुला लिया। उसके गीत सुन कर वह इतना खुश हुआ कि सूरदास को एक कस्बे का हाकिम बना दिया, पर ईर्ष्या करने वालों ने बादशाह के पास चुगली करके फिर उसे बुला लिया और जेल में नजरबंद कर दिया। सूरदास जेल में रहता था।उसने जब जेल के दरोगा से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? तो उसने कहा –'तिमर यह सुन कर सूरदास बहुत हैरान हुआ।कवि था, ख्यालों की उड़ान में सोचा, 'तिमर..मेरी आंखें नहीं मेरा जीवन तिमर (अन्धेर) में, बंदीखाना तिमर (अन्धेरा) तथा रक्षक भी तिमर (अन्धेर)!' उसने एक गीत की रचना की तथा उस गीत को बार–बार गाने लगा। वह गीत जब बादशाह ने सुना तो खुश होकर सूरदास को आजाद कर दिया, तथा सूरदास दिल्ली जेल में से निकल कर मथुरा की तरफ चला गया। रास्ते में कुआं था, उसमें गिरा, पर बच गया तथा मथुरा–वृंदावन पहुंच गया। वहां भगवान कृष्ण का यश गाने लगा।

ग्रंथ और काव्य :

सूरदास के मत अनुसार श्री कृष्ण भक्ति करने और उनके अनुग्रह प्राप्त होने से मनुष्य जीव आत्मा को सद्गति प्राप्त हो सकती है। सूरदास ने वात्सल्य रस, शांत रस, और श्रिंगार रस को अपनाया था। सूरदास ने केवल अपनी कल्पना के सहारे श्री कृष्ण के बाल्य रूप का अदभूत, सुंदर, दिव्य वर्णन किया था। जिसमे बाल–कृष्ण की चपलता, स्पर्धा, अभिलाषा, और आकांक्षा का वर्णन कर के विश्वव्यापी बाल–कृष्ण स्वरूप का वर्णन प्रदर्शित किया था।सूरदास ने अत्यंत दुर्लभ ऐसा "भक्ति और श्रृंगार" को मिश्रित कर के, संयोग वियोग जैसा दिव्य वर्णन किया था जिसे किसी और के द्वारा पुनः रचना अत्यंत कठिन होगा। स्थान स्थान पर सूरदास के द्वारा लिखित कूट पद बेजोड़ हैं। यशोदा मैया के पात्र के शील गुण पर सूरदास लिखे चित्रण प्रशंसनीय हैं। सूरदास के द्वारा लिखी गईं कविताओं में प्रकृति–सौन्दर्य का सुंदर, अदभूत वर्णन किया गया है। सूरदास कविताओं में पूर्व कालीन आख्यान, और ईतिहासिक स्थानों का वर्णन निरंतर होता हैं। सूरदास हिन्दी साहित्य के महा कवि माने जाते हैं।श्रीमदभगवत गीता के गायन में सूरदास जी की रूचि बचपन से ही थी और आपसे भक्ति का एक पद सुनकर महाप्रभु वल्लभाचार्य जी ने आपको अपना शिष्य बना लिया और आप

श्रीनाथजी के मंदिर में कीर्तन करने लगे। अष्टछाप के कवियों में सूरदास जी सर्वश्रेष्ठ कवि माने गए हैं, अष्टछाप का संगठन वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने किया था।

सूरसागर में लगभग एक लाख पद होने की बात कही जाती है। किन्तु वर्तमान संस्करणों में लगभग पाँच हजार पद ही मिलते हैं। विभिन्न स्थानों पर इसकी सौ से भी अधिक प्रतिलिपियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनका प्रतिलिपि काल संवत् १६५८ वि. से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक है। इनमें प्राचीनतम प्रतिलिपि नाथद्वारा (मेवाड़) के "सरस्वती भण्डार' में सुरक्षित पायी गई हैं। सूरसागर सूरदासजी का प्रधान एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें प्रथम नौ अध्याय संक्षिप्त है, पर दशम स्कन्ध का बहुत विस्तार हो गया है। इसमें भक्ति की प्रधानता है।इसके दो प्रसंग "कृष्ण की बाल–लीला' और "भ्रमर–गीतसार' अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। सूरसागर की सराहना करते हुए डॉक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है ""काव्य गुणें की इस विशाल वनस्थली में एक अपना सहज सौन्दर्य है। वह उस रमणीय उद्यान के समान नहीं जिसका सौन्दर्य पद–पद पर माली के कृतित्व की याद दिलाता है, बल्कि उस अकृत्रिम वन–भूमि की भाँति है जिसका रचयिता रचना में घुलमिल गया है।" दार्शनिक विचारों की दृष्टि से "भागवत' और "सूरसागर' में पर्याप्त अन्तर है।साहित्य लहरी यह ११८ पदों की एक लघु रचना है। इसके अन्तिम पद में सूरदास का वंशवृक्ष दिया है, जिसके अनुसार सूरदास का नाम सूरजदास है और वे चन्दबरदायी के वंशज सिद्ध होते हैं। अब इसे प्रक्षिप्त अंश माना गया है और शेष रचना पूर्ण प्रामाणिक मानी गई है। इसमें रस, अलंकार और नायिका–भेद का प्रतिपादन किया गया है। इस कृति का रचना–काल स्वयं कवि ने दे दिया है जिससे यह संवत् विक्रमी में रचित सिद्ध होती है। रस की दृष्टि से यह ग्रन्थ विशुद्ध श्रृंगार की कोटि में आता है।भक्ता शिरोमणि सूरदास जी ने लगभग सवा–लाख पदों की रचना की थी। 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की खोज तथा पुस्तसकालय में सुरक्षित नामावली के अनुसार सूरदास के ग्रन्थोंा की संख्याा 25 मानी जाती है।

- सूरसागर
- सूरसारावली
- साहित्यव–लहरी
- नाग लीला
- गोवर्धन लीला
- पद संग्रह
- सूर पच्चीसी

सूरदास जी ने अपनी इन रचनाओं में श्रीकृष्ण की विविध लीलाओं का वर्णन किया है। इनकी कविता में भावपद और कलापक्ष दोनों समान रूप से प्रभावपूर्ण है। सभी पद गेय है, अतःउनमें माधुर्य गुण की प्रधानता है। इनकी रचनाओं में व्यक्त सूक्ष्म दृष्टि का ही कमाल है कि आलोचक अब इनके अनघा होने में भी सन्देाह करने लगे है।

साहित्यिक सर्वेक्षणः

बाजपेयी, नंद दुलारे (2018) सूर ने अपनी व्यापक विचारणा से नारी को पूर्ण मानव का दर्जा देने और उसे पुरुष के समकक्ष स्थापित करने की पहल की है। वे ही एकमात्र ऐसे कवि हैं जिन्होंने नारी की शक्ति, बुद्धि कौशल और कार्यक्षमता पर पूर्ण आस्था व्यक्त की है।

रूबी त्रिपाठी(2017) सूरदास की नारी दृष्टि, सूर की मानवीयता देखिए कि वे नारी पर न तो किसी प्रकार का लांछन लगाते हैं न ही, उसे दुःख का मूल मानते हैं। उनकी नारी, रंगमहल या रनिवास की दीवारों में कैद स्त्री नही ं है। नारी के प्रति सूर के मन में किसी प्रकार का संदेह नही ं है।

सूरदास की शैलीः

सूरदास जी ने सरल एवं प्रभवपूर्ण शेली का प्रयोग किया है। इनका काव्य मुक्तक शैली आधारित है। कथा–वर्णन में वर्णनात्म क शैली का प्रयोग हुआ है। दृष्टिकूट–पदों में कुछ क्लिष्टता का समावेश अवश्य हो गया है। सूरदास जी ने अपने पदों में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है तथा इनके सभी पद गीतात्मक हैं, जिस कारण इनमें माधुर्य गुण की प्रधानता है। इन्होंने सरल एवं प्रभावपूर्ण शैली का प्रयोग किया है। उनका काव्य मुक्तक शैली पर आधारित है। व्यंग्य वक्रता और वाग्विदग्धता सूर की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। कथा–वर्णन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। दृष्टकूट पदों में कुछ क्लिष्टता अवश्य आ गई है।

महाकवि सूरदास का साहित्य में स्थानः

महाकवि सूरदास का साहित्य में बेहद ऊँचा स्थान है। वे भक्तिकाल की सगुण विचारधारा की कृष्णाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि रहे हैं। कृष्ण भक्ति के जितने भी कवि हुए हैं, उनमें सबसे ऊँचा स्थान सूरदास का है।सूरदास को हिंदी साहित्य का सूर्य भी कहा जाता है, क्योंकि उनके पदों के माध्यम से कृष्ण भक्ति का जैसा वर्णन हुआ है, वैसा अद्भुत है। महाकवि सूरदास के बारे में कहा जाता है कि वह अंधे थे, उसके बावजूद उन्होंने इतने सुंदर पदों की रचना की। यही उनकी महानता और प्रतिभा को प्रकट करता है, उनके द्वारा रचित कृष्ण भक्ति के पद आज भी कानों में रस घोल देते हैं।कृष्णभक्ति और उनके बालरूप का जितना सुंदर एवं मनोहारी चित्रण महाकवि सूरदास ने किया है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। जिस तरह रामभक्ति के लिए तुलसीदास जाने जाते हैं, उसी तरह कृष्ण भक्ति के लिए सूरदास जाने जाते हैं।कृष्ण भक्ति की परंपरा में सूरदास के बाद मीराबाई का ही स्थान है। सूरदास का स्थान सबसे ऊपर है, इसलिए हिंदी साहित्य में सूरदास का नाम महान कवियों की पंक्ति में शामिल होता है। सूरदास जी महान् काव्यात्मक प्रतिभा से सम्पन्न कवि थे। कृष्णभक्ति को ही इन्होंने काव्य का मुख्य विषय बनाया। इन्होंने श्रीकृष्ण के सगुण रूप के प्रति सखा भाव की भक्ति का निरूपण किया है। इन्होंने मानव हृदय की कोमल भावनाओं का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। अपने काव्य में भावात्मक पक्ष और कलात्मक पक्ष दोनों पर इन्होंने अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है।सूरदास जी हिन्दी साहित्य के महान् काव्यात्मक प्रतिभासम्पन्न कवि थे। इन्होंने श्रीकृष्ण की बाल–लीलाओं और प्रेम–लीलाओं का जो मनोरम चित्रण किया है, वह साहित्य में अद्वितीय है। हिन्दी साहित्य में वात्सल्य वर्णन का एकमात्र कवि सूरदास जी को ही माना जाता है, साथ ही इन्होंने विरह–वर्णन का भी अपनी रचनाओं में बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है। सूरदास ब्रजभाषा कवियों में सर्वोत्कृष्ट कवि है । इनका बाल प्रकृति – चित्रण, वात्सल्य तथा श्रृंगार का वर्णन अद्वितीय है । जब तक सूर की प्रेमशक्ति वाणी का सुधा प्रवाह है, तब तक हिन्दू जीवन से समरसता का स्त्रोत कभी सूखने नही पाएगा ।

भावपक्ष – सूरदास कृष्ण भक्त थे । सूर ने अपने पदों में मानव के मन के भावों को प्रकट किया है। सूर के काव्य में शान्त, श्रृंगार और वात्सल्य रस स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। सूर वात्सल्य रस के सर्वोत्कृष्ट कवि है।

कलापक्ष – सूरदास ने बोलचाल की ब्रजभाषा को लालित्य–प्रधान ब्रजभाषा बना दिया है। सूरदास ने अपनी काव्य रचना गेय पद शैली में की है । सूरदास की रचनाओं में अलंकार अपने स्वाभाविक सौन्दर्य के साथ प्रविष्ट हो जाते है । इन्होने मुक्तक गेय पदों की रचना की है । उनके पदों में संगीतात्मकता सर्वत्र परिलक्षित होटी है ।

- सूरसागर– यह सूरदास जी की एकमात्र प्रामाणिक कृति है। यह एक गीतिकाव्य है, जो 'श्रीमद्भागवत' ग्रन्थ से प्रभावित है। इसमें कृष्ण की बाल–लीलाओं, गोपी–प्रेम, गोपी–विरह, उद्धव–गोपी संवाद का बड़ा मनोवैज्ञानिक और सरस वर्णन हैं।

- सूरसारावली– यह ग्रन्थ 'सूरसागर' का सारभाग है, जो अभी तक विवादास्पद स्थिति में है, किन्तु यह भी सूरदास जी की एक प्रामाणिक कृति है। इसमें 1107 पद हैं।
- साहित्य लहरी– इस ग्रन्थ में 118 दृष्टकूट पदों का संग्रह है तथा इसमें मुख्य रूप से नायिकाओं एवं अलंकारों की विवेचना की गई है। कहीं–कहीं श्रीकृष्ण की बाल–लीलाओं का वर्णन तथा एक–दो स्थलों पर 'महाभारत की कथा के अंशों की झलक भी दिखाई देती है।

सूरदास रचित कुछ दोहे –

जो पै जिय लज्जा नहीं, कहा कहौं सौ बार।
एकहु अंक न हरि भजे, रे सठ ६ सूर गँवार॥
दीपक पीर न जानई, पावक परत पतंग।
तनु तो तिहि ज्वाला जरयो, चित न भयो रस भंग॥
अरु हलधर सों भैया कहन लागे मोहन मैया मैया।
नंद महर सों बाबा अरु हलधर सों भैया।।
ऊंचा चढी चढी कहती जशोदा लै लै नाम कन्हैया।
दुरी खेलन जनि जाहू लाला रे! मारैगी काहू की गैया।।
गोपी ग्वाल करत कौतुहल घर घर बजति बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कों चरननि की बलि जैया।।

1.

सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ :

1. सूरदास के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण के अनुग्रह से मनुष्य को सद्गति मिल सकती है। अटल भक्ति कर्मभेद, जातिभेद, ज्ञान, योग से श्रेष्ठ है।
2. सूर ने वात्सल्य, श्रृंगार और शांत रसों को मुख्य रूप से अपनाया है। सूर ने अपनी कल्पना और प्रतिभा के सहारे कृष्ण के बाल्य–रूप का अति सुंदर, सरस, सजीव और मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। बालकों की चपलता, स्पर्धा, अभिलाषा, आकांक्षा का वर्णन करने में विश्व व्यापी बाल–स्वरूप का चित्रण किया है। बाल–कृष्ण की एक–एक चेष्टा के चित्रण में कवि ने कमाल की होशियारी एवं सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय दिया है–

मैया कबहिं बढैगी चौटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।

सूर के कृष्ण प्रेम और माधुर्य प्रतिमूर्ति है। जिसकी अभिव्यक्ति बड़ी ही स्वाभाविक और सजीव रूप में हुई है।

3. जो कोमलकांत पदावली, भावानुकूल शब्द–चयन, सार्थक अलंकार–योजना, धारावाही प्रवाह, संगीतात्मकता एवं सजीवता सूर की भाषा में है, उसे देखकर तो यही कहना पड़ता है कि सूर ने ही सर्व प्रथम ब्रजभाषा को साहित्यिक रूप दिया है।
4. सूर ने भक्ति के साथ श्रृंगार को जोड़कर उसके संयोग–वियोग पक्षों का जैसा वर्णन किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।
5. सूर ने विनय के पद भी रचे हैं, जिसमें उनकी दास्य–भावना कहीं–कहीं तुलसीदास से आगे बढ़ जाती है–

हमारे प्रभु औगुन चित न धरौ।
समदरसी है मान तुम्हारौ, सोई पार करौ।

6. सूर ने स्थान–स्थान पर कूट पद भी लिखे हैं।
7. प्रेम के स्वच्छ और मार्जित रूप का चित्रण भारतीय साहित्य में किसी और कवि ने नहीं किया है यह सूरदास की अपनी विशेषता है। वियोग के समय राधिका का जो चित्र सूरदास ने चित्रित किया है, वह इस प्रेम के योग्य है
8. सूर ने यशोदा आदि के शील, गुण आदि का सुंदर चित्रण किया है।
9. सूर का भ्रमरगीत वियोग–शृंगार का ही उत्कृष्ट ग्रंथ नहीं है, उसमें सगुण और निर्गुण का भी विवेचन हुआ है। इसमें विशेषकर उद्धव–गोपी संवादों में हास्य–व्यंग्य के अच्छे छींटें भी मिलते हैं।
10. सूर काव्य में प्रकृति–सौंदर्य का सूक्ष्म और सजीव वर्णन मिलता है।
11. सूर की कविता में पुराने आख्यानों और कथनों का उल्लेख बहुत स्थानों में मिलता है।
12. सूर के गेय पदों में हृदयस्थ भावों की बड़ी सुंदर व्यजना हुई है। उनके कृष्ण–लीला संबंधी पदों में सूर के भक्त और कवि हृदय की सुंदर झाँकी मिलती है।
13. सूर का काव्य भाव–पक्ष की दृष्टि से ही महान नहीं है, कला–पक्ष की दृष्टि से भी वह उतना ही महत्वपूर्ण है। सूर की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा वाग्वैदिग्धपूर्ण है। अलंकार–योजना की दृष्टि से भी उनका कला–पक्ष सबल है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सूर की कवित्व–शक्ति के बारे में लिखा है–सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकार–शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे–पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सूरदास हिंदी साहित्य के महाकवि हैं, क्योंकि उन्होंने न केवल भाव और भाषा की दृष्टि से साहित्य को सुसज्जित किया, वरन् कृष्ण–काव्य की विशिष्ट परंपरा को भी जन्म दिया।

अध्ययन पद्धति :

यह आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषण पर आधारित है । साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों का संकलन किया गया है । वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है।

निश्कर्श:

सूरदास अपने रचनाओं में वात्सल्य, श्रृंगार और शांत रस को विशेष स्थान प्रदान किये हैं। इन्होने कृष्ण के बाल्यावस्था का सजीव चित्रण अपनी कल्पनाशक्ति से की है कृष्ण, गोपियाँ इन सबका उल्लेख इनके रचना में मिलते हैं। महाकवि सूरदास का साहित्य में स्थान अद्वितीय है भक्तों में सर्वोपरि हैं। संस्कृत भाषा साहित्य में वाल्मीकि का जो स्थान है वही स्थान सूरदास का ब्रजभाषा में है, इसलिए ब्रजभाषा साहित्य में और हमारे हिंदी साहित्य में सूरदास सदैव स्मरणीय रहेंगे।

सन्दर्भः

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, (१९२९). हिन्दी साहित्य का इतिहास. काशीः उमर प्रचारिणी सभा.
2. .त्रिपाठी, रूबी(2017) सूरदास की नारी दृष्टि, जेटिर अगस्त, खंड 4, अंक 8, नई दिल्ली ।
3. शर्मा,डॉ. धीरेन्द्र (2012) सूरसागर सार, रवीन्द्र प्रकाशन, ग्वालियर ।
4. शर्मा, मुन्शीराम, (2015) सूर संचयन, साहित्य भवन, इलाहाबाद ।
5. बाजपेयी, नंद दुलारे (2018) महाकवि सूर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
6. गुप्त, गणपति चन्द्र, (2009) भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली ।